संगम

सावरिया को ढूँढ रही है।
आसमान को घूर रही है।
रिमझिम करके नाच रही है।
किनारों को सहला रही है।

कश्तियों को टकरा रही है।
पंछियों को छला रही है।
अंशुमान को डुबा रही है।
सितारों को चुन रही है।

मछुआरों चल रहे हैं।
नाव लेके घूम रही है।
मछलियों को ढूँढ रहे हैं।
जालों को बिछा रहे हैं।

लहरों तड़पके जा रहे हैं।
बेचैन बनके उमड़ रही है।
बादल तो आँखें भरी है।
अश्कों को गिरा रहे हैं।

मेघ पर तो आप भी हो।
पहाड़ पर एक बूँद भी हो।
तराई पर तो नदी भी हो।
गाँव पर एक झरना भी हो।

शुरु हुई थी उसकी सैर।
थक रही थी हाथ और पैर।
पहुँचने थे वो तो गैर।
बढ़ रही थी उसकी तैर।

लहरे बिछाया दोनो हाथ।
गले मिलाने उसके साथ।
कब ~~आऊँगी~~ आऊँगी उसी लम्हे।?
कब देखूँगी मैं तुम्हें।

रिश्ते तो सालो पुराने।
आयी थी दिल चुराने।
बुनी थी ख्वाब, न बुझाने।
तरसती थी वो बात सुनाने।

पुकारती थी उसे प्यार से नदी।
बहती थी वो जागे न सोचे।
पहुँचने थे उसे दूर किनारे।
मिलाने थे अपने सनम से।

विवश थी वो हर एक पल।
कहने थी उसको बाँतो दिल।
पर कर रही थी मक्कान जलन।
रुक दिया था सारी चलन।

डाल रही थी मैली जल।
छीन रही थी उसकी दिल।
काट रही थी साथी पेड़।
चोट पहुँची जान भी तोड़।

दिमाग बन गयी जैसे पागल।
खोने लगी सारी होश।
गर्जने लगी शोर मचाके।
बहाने लगी पार किनारे।

नाचने लगी संहार की ताल।
लूटने लगी रूह की माल।
निगलने लगी गाँव-शहर।
चिल्लाने लगी मानव वर्ग।

रुकने को मिली न राह।
उबलते जा रही थी रूह।
चुराके जा रही थी सब।
मुड़के न देखती थी अब।

नज़र सख़्त थी दूर किनारे।
सारी शख़्स थी लाश बनाये।
जीव-जंतुओं बह रही थी।।
सारी चीज़ों गिर रही थी।

लहरों जोर से उमड़ रही थी।
आँखों तलाश में व्यस्त बनी थी।
एक पल दो नज़र मिल गयी
बस किया अपनी ताण्डव!

तन्हाई ने दो हाथ मिलाई।
रुहानियत की ज्वाल उभराई।
मोहब्बत की जो माया दुनिया।
बना दिया खामोश वहाँ।

लहर और नदी एक हो गयी।
जिस्म और रूह दो हो गयी।
मर्त्य धूल पर रेंग रही थी।
पुकारती थी ~~मोक्ष~~ मोक्ष कैलाश।

बाढ़ सिखाया एक नयी पाठ।
मानव पर इंसानियत चमकायी।
बढ़ रही थी कंधों मिलाके।
झांक रही थी नये दुनिया पर।

भीगी किताबें रो रही थी।
फैली स्याही बोल रही थी।
"प्यार भरो सारी जगत
प्यार बिना बंजर है यहाँ।"